शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'उसका घर' उपन्यास की मूल संवेदना

डॉ. पिंकी पारीक
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य समाज की समस्त संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का कोश है। साहित्य से ही युग विशेष की सामाजिक मान्यताएं, सांस्कृतिक प्रतिमान तथा जीवन मूल्य प्रतिबिम्ब होते हैं। साहित्य ही ऐसा माध्यम है जो बदलते हुए समाज के गहरे रूप से हमारी पहचान कराता है। वर्तमान समय या यों कहे आधुनिक युग तक आते-आते भारतीय समाज में क्या-क्या परिवर्तन हुए इसे साहित्य के माध्यम से बखूबी देखा जा सकता है। साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं में उपन्यास एक है तथा वर्तमान समय के उपन्यासकारों में मेहरुन्निसा परवेज अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनके रचनात्मक क्षेत्र का विषय अपने समय और समाज के यथार्थ को पूरी आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त करता है। इस शोधपत्र में मेहरुन्निसा जी के एक उपन्यास 'उसका घर' की मूल संवेदना पर चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

मेहरुन्निसा परवेज के प्रमुख उपन्यास हैं कोरजा, अकेला पलाश, आँखों की दहलीज, उसका घर , समरांगण तथा पासंग। देखा जाये तो मेहरुन्निसा परवेज के ये सभी उपन्यास पूरी तरह से सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण हैं। यह सभी किसी न किसी रूप से समाज से पूरी तरह से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं।

मेहरुन्निसा जी का 'उसका घर' उपन्यास अपनी संवेदनाओं को पूरी आत्मीयता के साथ व्यक्त करता है। जैसा कि भारतीय समाज भले ही कितना ही आधुनिक होने का दावा करे लेकिन एक लड़की या औरत को लेकर आज भी लगभग उसके विचार दकियानूसी विचारों से भरे हुए हैं। बेटी या बहू किसी भी रूप में लो समाज उससे कुछ न कुछ पाने के कामना करता है। और यदि वह किसी ना किसी रूप में अपने घर वालों या ससुराल वालों की आवश्यकताओं को पूरा कर पाने में असमर्थ हो तो उसको बहिष्कृत कर दिया जाता है। या यों कहें छोड़ दिया जाता है।

'उसका घर' उपन्यास की मूल संवेदना यही है कि कहने को तो समाज रूपी गाड़ी औरत से ही चलती है। औरत इस समाज की निर्मात्री है। निर्मात्री यदि किसी भी रूप में अस्वस्थ है तो समाज उसका तिरस्कार करने में एक पल का समय भी नहीं लगाता है। "मेरी शादी हुई थी मै सुन्दर थी पर सिर्फ मेरी दमे की बीमारी ने ससुराल वालों को चोंका दिया और मेरे पति को लगा कि मैंने उनके साथ जबरदस्त धोखा किया है। माना मुझे बीमारी थी पर वह मेरे हाथ की चीज तो नहीं थी फिर क्यों मेरे सारे अधिकार छीन लिए गए।"1

'उसका घर ' उपन्यास में यौन शोषण तथा संयुक्त परिवार विघटन का चित्रण साफ-साफ देखा जा सकता है। संयुक्त परिवार की टूटन,निराशा और संत्रास की अभिव्यक्ति इस

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपन्यास के माध्यम से हुई है। 'एलमा' जो दमे की मरीज होने के कारण उसके ससुराल वाले उसे तलाक दे देते हैं, क्योंकि वह एक स्वस्थ औरत की तरह काम करने में सक्षम नहीं है। अतः नारी को जहां काम करने वाली मशीन माना जाता है वहाँ यदि नारी अपने को थोड़ा सा अक्षम महसूस कर रही है तो ऐसी नारी का क्या काम ? इस उपन्यास में इस संवेदना को पूरी आत्मीयता के साथ उभारा गया है कि नारी का स्वतंत्र वजूद भारतीय समाज में कहाँ तक सुरक्षित है तथा तलाक के बाद क्या नारी अपने परिवार में, जिसने उसे पैदा किया है पूर्ण अधिकार के साथ अपना जीवन निर्वाह कर पाती है। इस उपन्यास में एलमा नामक चरित्र के माध्यम से यह बात पूरी तरह से अभिव्यक्त होती है। जहां बेटी पैदा होकर इतनी बड़ी होती है और शादी के बाद यदि तलाक हो जाता है तो वही परायों-सा व्यवहार घर में सहन करती है। भाई जो कि बहन का रक्षक माना जाता है उसी के सामने वह लाचार हो जाती है।

यह मान्यता है कि बहन के सामने कितनी समस्या आ जाये भाई उसकी रक्षा करता है लेकिन उसका घर की संवेदना देखे तो कलयुगी भाई की कल्पना चरितार्थ होती है। एलमा अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्वयं नौकरी करती है। वहीं उसका स्वार्थी भाई मात्र अपना बैंक बैलेंस बढ़ाने के चक्कर में उसका सौदा अपने बॉस से करता है " एलमा की तरह कितनी ही प्रेमिकाएं है जिनसे वह प्रेम जताता है। एलमा का प्रेम वह उधार खाते में नहीं लिखता बल्कि भैया का बैंक बैलेंस काफी बढ़ रहा है।"2

इस उपन्यास में मात्र भाई की ही दुष्टता को नहीं बल्कि पिता जिसकी गोद में बेटी अपने आप को सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करती है। वही पिता कैसे बेटी का भक्षक बन सकता है। आज हम आये दिन समाचार पत्रों के माध्यम से जानते हैं कि 'बेटी के साथ पिता का दुष्कर्म' यह बात 'उसका घर' उपन्यास के माध्यम से बखूबी देखी जा सकती है। सोफिया एक गरीब परिवार से है लेकिन उसका पिता शराब के नशे में अपनी बेटी को भी नहीं छोड़ना चाहता। सोफ़िया के माध्यम से एक ऐसा चरित्र सामने आता है जो पुरुष के वास्तविक चरित्र का खुलासा करता है। "रात को जब में सो गयी तो लगा मेरे पास कोई है वह गुस्से में काँप रही थी। मैंने भय से आँखे मूंद ली। ओह, तो यह उसका बाप लेटा है।"3

सोफिया का मानना है कि पुरुष मात्र शारीरिक सुख की प्राप्ति तक सीमित है। यह बात उसके इस दर्द भरे व्यक्तव्य से द्रष्टिगोचर होती है कि "मर्द कभी जूठा खाना पसंद नहीं करता, औरत तो हमेशा ही जूठा खाने की आदी होती है। हिन्दू धर्म में देखो न पति की जूठी थाली में खाना आदर्श माना जाता है। औरत तो जूठा खाने की आदी होती है । चाहे खाने के मामले में हो चाहे शारीरिक सम्बन्ध में हो।"4

आधुनिक समाज में वैसे तो नारी को पूरी तरह स्वतंत्र कर दिया लेकिन फिर भी शादी जैसे अहम् फैसले पर मर्जी इसके घर वालों की ही रहती है। रेशमा इस उपन्यास की ऐसी पात्र है जो ईसाई होते हुए हिन्दू लड़के से प्यार करती है लेकिन अपने घर वालों की मर्जी के खिलाफ उससे शादी नहीं करना चाहती और अंत तक संघर्ष करती है। "दीदी तुम तो घबरा जाती हो, भला कहीं माँ-बाप के ठुकराए आशीर्वाद से जीवन बना है.... मैं तो देव को इस घर के दामाद का सम्मान दिलवाउंगी और खुद मैं सम्मान से विदा होकर जाउंगी।"5

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'उसका घर' उपन्यास की तीनों नारी पात्रों का संवेदनात्मक रूप सामने आता है। एलमा के अनुसार हर रिश्ते में प्यार की जरुरत है तथा जब तक ह्रदय से कोई किसी की कद्र नहीं करता तो यह सुखी जीवन की पहचान नहीं है। रेशमा हर हालत में शारीरिक व मानसिक सामीप्य को प्रेम मानती है तथा सोफ़िया का मानना है कि स्त्री और पुरुष में मात्र शरीर का सम्बन्ध होता है।

निष्कर्ष

उपन्यास की संवेदनात्मक स्थिति का परीक्षण किया जाये तो हर हालत में पुरुष वर्ग चाहे वह किसी भी रूप में हो घिनौने रूप को सामने रखता है जब कि नारी और पुरुष समाज के ऐसे पहलू हैं जिनके बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। यह उपन्यास समाज के उस घिनौने रूप को हमारे सामने रखता है जिसके चलते नारी को अपने जीवन के हाथों मजबूर होकर फैसले करने होते हैं तथा ऐसे हालत में न केवल वह अपने जीवन को दांव पर लगाती है बल्कि अपने उज्वल भविष्य को भी अंधकारमय बना देती है। इससे भारतीय समाज की परम्परा में टूटती नारी की दारुण व्यथा को खुली आँखों से देखा जा सकता है।

एक प्रश्न सामने आता है कि क्या हर रिश्ते को सुचारू रूप से निभाने की जिम्मेदारी सिर्फ नारी पर है पुरुष पर कुछ भी नहीं। 'उसका घर' उपन्यास की मूल संवेदना यही सामने आती है कि नारी प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मात्र अपने अस्तित्व की तलाश करती आई है और शायद करती रहेगी। नारी किसी न किसी रूप में पुरुष के द्वारा ठगी जाती रही है तथा लगता है नारी को अपने आप को इस से निकालने के लिए बहुत अधिक प्रयत्न करना पड़ेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1 उसका घर, पृष्ठ 148 : मेहरुन्निसा परवेज,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ,1972

2 उसका घर, पृष्ठ 58 : मेहरुन्निसा परवेज,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ,1972

3 उसका घर, पृष्ठ 85 : मेहरुन्निसा परवेज,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ,1972

4 उसका घर, पृष्ठ 149 : मेहरुन्निसा परवेज,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ,1972

5 उसका घर, पृष्ठ 81 : मेहरुन्निसा परवेज,नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ,1972